BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

भारतीय नाटक परंपरा के आधारस्तंभ 'सफ़दर हाशमी' का जीवन एवं कार्य

रूपा कुमारी (पीएच. डी.)
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
डिग्री कॉलेज, गोमिया, बोकारो, झारखण्ड

भारतीय रंगमंच की परंपरा समृद्ध और विविधतापूर्ण रही है। इसकी यात्रा प्राचीन संस्कृत नाटकों से लेकर आधुनिक सामाजिक एवं राजनीतिक नाटकों तक फैली हुई है। इस परंपरा में अनेक नाटककारों, निर्देशकों और अभिनेताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्हीं में से एक प्रमुख नाम सफ़दर हाशमी का है, जिन्होंने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने का कार्य किया। उनका जीवन और कार्य भारतीय रंगमंच के इतिहास में एक प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित हुआ है। यह शोध पत्र उनके योगदान का विश्लेषण करने का प्रयास करेगा। भारतीय नाटक परंपरा की जड़ें वेदों और संस्कृत नाटकों में देखी जा सकती हैं। भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र' इस परंपरा का आधार माना जाता है। प्राचीन काल में कालिदास, भास, भवभूति आदि ने उत्कृष्ट नाटकों की रचना की। मध्यकाल में पारसी और लोक नाटकों का विकास हुआ। आधुनिक काल में भारतीय रंगमंच को एक नया आयाम मिला, जिसमें सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों को प्रमुखता दी जाने लगी। 20वीं शताब्दी में नुक्कड़ नाटकों की परंपरा उभरी, जिसने जनचेतना को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सफ़दर हाशमी का जन्म 12 अप्रैल 1954 को दिल्ली में हुआ था। उनका परिवार शिक्षित और प्रगतिशील विचारधारा का था, जिसने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके माता-पिता ने उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली में प्राप्त की और दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। शिक्षा के दौरान ही वे साहित्य, राजनीति और नाट्यकला की ओर आकर्षित हुए। सफ़दर हाशमी के जीवन पर तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ा। वे छात्र जीवन में ही प्रगतिशील आंदोलनों से जुड़ गए और समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हुए। उन्होंने कला और नाटक को एक सामाजिक परिवर्तन के माध्यम के रूप में अपनाया।

सफ़दर हाशमी भारतीय नुक्कड़ नाट्य परंपरा के एक प्रमुख स्तंभ थे। वे एक प्रतिबद्ध रंगकर्मी, निर्देशक, लेखक और राजनीतिक कार्यकर्ता थे। 1989 में अपनी नाट्य प्रस्तुति के दौरान उनकी हत्या कर दी गई, जिससे वे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बन गए। उन्होंने 'जन नाट्य मंच' की स्थापना की और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से श्रमिकों, किसानों और आम जनता की समस्याओं को उठाया। उनके नाटक 'मशीन', 'हल्ला बोल', और 'औरत' जैसे विषयों पर केंद्रित थे, जिन्होंने सामाजिक अन्याय, शोषण और वर्ग संघर्ष को उजागर किया। सफ़दर हाशमी ने नुक्कड़ नाटकों को एक प्रभावी माध्यम के रूप में स्थापित किया, जो सीधे जनता से संवाद स्थापित करता था। उनके नाटक सरल भाषा और वास्तविक परिस्थितियों को दर्शाते थे, जिससे वे जनता को जागरूक करने का कार्य कर सके। 1973 में सफ़दर हाशमी ने जन नाट्य मंच की स्थापना की। यह संगठन नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाने के लिए समर्पित था। जन नाट्य मंच ने श्रमिकों, किसानों और अन्य शोषित वर्गों की समस्याओं को नाटकों के माध्यम से प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया। नाटक ***'मशीन'*** में औद्योगीकरण और श्रमिकों के शोषण पर केंद्रित था। इसमें दिखाया गया कि कैसे मशीनों के बढ़ते उपयोग से श्रमिकों का हक छीना जा रहा है और उन्हें अमानवीय परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। ***'गाँव की कहानी'*** में ग्रामीण भारत की समस्याओं और विस्थापन को दर्शाने वाला था। इसमें बताया गया कि कैसे किसानों की ज़मीनें छीनकर उन्हें शहरी मजदूर बनने के लिए विवश

@2025 Bihar Shodh Samaagam

किया जाता है। ***'औरत'*** नाटक में महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता को प्रस्तुत करता है। इसमें समाज में महिलाओं की स्थिति, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा और शिक्षा के अभाव को उजागर किया गया है। ***'हमला'*** नाटक में राजनीतिक दमन और स्वतंत्रता पर हमलों के विरोध में लिखा गया था। इसमें दिखाया गया कि सत्ता किस प्रकार असहमति की आवाज़ को दबाने के लिए दमनकारी नीतियों का सहारा लेती है। ***'हल्ला बोल'*** नाटक में सफ़दर हाशमी की अंतिम प्रस्तुति थी, जिसमें श्रमिकों के अधिकारों की बात की गई थी। यह नाटक उस समय और भी प्रासंगिक हो गया जब इसकी प्रस्तुति के दौरान ही उन पर हमला किया गया और उनकी मृत्यु हो गई। ***'दुखिया'*** में गरीबों और दलितों की दुर्दशा को दर्शाता है। इसमें समाज में व्याप्त भेदभाव और अन्याय को उजागर किया गया है।

सफ़दर हाशमी के नाटक आम बोलचाल की भाषा में लिखे गए थे, जिससे वे व्यापक जनता तक आसानी से पहुँचते थे। उनकी प्रस्तुति में गीत, कविता, और संवाद का समावेश था, जो नाटकों को रोचक और प्रभावी बनाता था। नुक्कड़ नाटकों का यह स्वरूप सीधे दर्शकों से संवाद स्थापित करता था और उन्हें सामाजिक मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता था और समाजवाद और लोकतंत्र में गहरी आस्था रखते थे। वे मानते थे कि रंगमंच केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी माध्यम है, जो समाज में परिवर्तन ला सकता है। उनका उद्देश्य सत्ता की निरंकुशता को उजागर करना और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना था। उनके नाटक मजदूरों, किसानों, महिलाओं और हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज़ उठाने का कार्य करते थे। वे शोषित वर्ग के संघर्षों को उजागर कर समाज में समानता और न्याय की भावना को मजबूत करना चाहते थे। सफ़दर हाशमी का मानना था कि कला और नाटक को सामाजिक जागरूकता का माध्यम बनाया जाना चाहिए। उनके नाटक सीधे जनता से संवाद स्थापित करते थे और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का कार्य करते थे। उन्होंने नुक्कड़ नाटकों को सामाजिक संघर्ष और परिवर्तन का प्रभावी हथियार बनाया।

1 जनवरी 1989 को सफ़दर हाशमी ने गाजियाबाद के जिला साहिबाबाद इलाके में एक नुक्कड़ नाटक का मंचन किया। यह नाटक मजदूर वर्ग के अधिकारों और उनके संघर्ष को समर्पित था। नाटक का शीर्षक 'हल्ला बोल' था, जो मजदूरों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाने वाला एक प्रभावशाली नाटक था। नाटक के दौरान, कुछ राजनीतिक विरोधियों ने हमला किया। यह हमला सफ़दर और उनके साथियों पर पथराव और हिंसक ढंग से किया गया। इस हमले में सफ़दर हाशमी गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। यह घटना न केवल भारतीय रंगमंच के लिए एक बड़ा झटका थी, बल्कि यह सामाजिक न्याय और कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष की एक नई इबारत भी लिख गई। सफ़दर की शहादत ने यह साबित कर दिया कि कला और सामाजिक संघर्ष के बीच एक गहरा संबंध है। उनकी मृत्यु ने यह संदेश दिया कि सच्ची कला हमेशा सत्ता और शोषण के खिलाफ खड़ी होती है। सफ़दर हाशमी की शहादत ने भारतीय समाज और रंगमंच को गहराई से प्रभावित किया। उनकी मृत्यु के बाद, नुक्कड़ नाटक और सामाजिक नाटकों को एक नई ऊर्जा मिली। उनके साथियों और अन्य नाट्य समूहों ने उनके सपनों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। सफ़दर की शहादत ने रंगमंच को एक नई दिशा दी। नुक्कड़ नाटकों ने अधिक व्यापक रूप से जनता के बीच अपनी पहुँच बनाई। उनके नाटकों की शैली और विषयवस्तु ने कई नए नाट्य समूहों को प्रेरित किया। उनकी मृत्यु ने सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के प्रति लोगों को और अधिक संवेदनशील बनाया। उनके नाटकों में उठाए गए मुद्दे, जैसे मजदूर अधिकार, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक अन्याय, अधिक प्रासंगिक हो गए। सफ़दर की शहादत ने राजनीतिक प्रतिरोध की एक नई लहर को जन्म दिया। उनके नाटकों ने लोगों को सत्ता के खिलाफ आवाज

उठाने के लिए प्रेरित किया। सफ़दर हाशमी की शहादत ने सामाजिक न्याय और कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष करने वालों को एक नई प्रेरणा दी।

उनका जीवन और कार्य यह संदेश देता है कि कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को बदलने की ताकत भी रखती है। सफ़दर के बलिदान ने कलाकारों को यह सिखाया कि कला को समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज बननी चाहिए। उनके नाटकों ने यह दिखाया कि कला किस तरह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकती है। सफ़दर की शहादत ने सामाजिक कार्यकर्ताओं को यह संदेश दिया कि संघर्ष में बलिदान की भी आवश्यकता होती है। उनका जीवन यह सिखाता है कि सामाजिक न्याय के लिए लड़ने वालों को हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। सफ़दर हाशमी की शहादत के बाद, उनकी स्मृति में 'सफ़दर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट' की स्थापना की गई। यह संगठन सामाजिक न्याय, कलात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए काम करता है। 'सफ़दर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट' ने सफ़दर के सपनों को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ शुरू कीं। इनमें नाटक प्रदर्शन, कला प्रदर्शनी, सेमिनार और कार्यशालाएँ शामिल हैं। मजदूरों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष को आगे बढ़ाया। यह संगठन सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाले कलाकारों और कार्यकर्ताओं को समर्थन देता है। कलात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया है। यह संगठन उन कलाकारों को प्रोत्साहित करता है जो सामाजिक मुद्दों पर काम करते हैं। नुक्कड़ नाटक आंदोलन को एक नई ऊर्जा और दिशा दी। उनके कार्य ने इस आंदोलन को जनता के बीच लोकप्रिय बनाया। सफ़दर ने नुक्कड़ नाटकों को सड़कों, गलियों और कारखानों तक पहुँचाया। उनके नाटकों ने आम लोगों को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों से जोड़ा। उनके नाटकों की भाषा सरल और प्रभावशाली थी, जिससे आम लोग उन्हें आसानी से समझ सकते थे। सफ़दर के नाटकों में सामाजिक संदेश प्रमुख था। उन्होंने नाटकों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने और उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित करने का काम किया। सफ़दर हाशमी के विचार और कार्य आज भी प्रासंगिक हैं। उनके नाटकों में उठाए गए मुद्दे, जैसे शोषण, सामाजिक अन्याय और मानवाधिकार, आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। आज भी समाज में शोषण और अन्याय की समस्याएँ मौजूद हैं। सफ़दर के नाटक इन समस्याओं के खिलाफ आवाज उठाने का एक शक्तिशाली माध्यम हैं। आज के दौर में, जब कलात्मक अभिव्यक्ति पर अनेक प्रतिबंध हैं, सफ़दर के विचार और कार्य कलाकारों को प्रेरणा देते हैं। सफ़दर का जीवन युवाओं के लिए एक मिसाल है। उनका संघर्ष युवाओं को सामाजिक न्याय और समानता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करता है।

सफ़दर हाशमी भारतीय नाट्य परंपरा के एक अमर स्तंभ हैं। उन्होंने नाटक को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम बनाया। उनका योगदान भारतीय रंगमंच को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करने में अहम रहा है। सफ़दर हाशमी ने नुक्कड़ नाटक को भारतीय रंगमंच का एक प्रमुख हिस्सा बनाया। उन्होंने इसे सड़कों, गलियों और कारखानों तक पहुँचाया, जहाँ आम लोग इससे जुड़ सकते थे। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को नाटकों का केंद्र बनाया। उनके नाटकों में शोषण, अन्याय और संघर्ष की भावना प्रमुख थी। सफ़दर हाशमी ने नाटक को जनता के बीच ले जाने का काम किया। उन्होंने सरल और प्रभावशाली भाषा का उपयोग करके नाटकों को आम लोगों के लिए सुलभ बनाया।

सफ़दर हाशमी का स्थान भारतीय नाट्य परंपरा में अद्वितीय है। उन्होंने नाटक को एक क्रांतिकारी माध्यम के रूप में स्थापित किया और इसे सामाजिक परिवर्तन का हथियार बनाया। सफ़दर हाशमी का जीवन और कार्य हमें कई महत्वपूर्ण सीख देता है। उनका संघर्ष और समर्पण हमें यह बताता है कि कला और सामाजिक सरोकारों का गहरा संबंध है। सफ़दर हाशमी ने सिखाया कि कला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करना और उसे बदलने की दिशा में काम करना

है। उनका जीवन यह सिखाता है कि सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने वालों को हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उनकी शहादत ने यह संदेश दिया कि संघर्ष में बलिदान की भी आवश्यकता होती है। सफ़दर ने सिखाया कि कला को सरल और प्रभावशाली बनाना चाहिए, ताकि आम लोग इसे समझ सकें और इससे जुड़ सकें। उनके नाटकों में सामूहिक संघर्ष की भावना प्रमुख थी। उन्होंने सिखाया कि सामाजिक परिवर्तन के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। सफ़दर हाशमी की विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक है। उनके विचार और कार्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे। भविष्य की पीढ़ियों को सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। उनके नाटकों में उठाए गए मुद्दे, जैसे शोषण, अन्याय और मानवाधिकार, आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। आज के दौर में, जब कलात्मक अभिव्यक्ति पर अनेक प्रतिबंध हैं, सफ़दर के विचार और कार्य कलाकारों को प्रेरणा देते हैं। उनकी विरासत हमें यह सिखाती है कि कला को सामाजिक सरोकारों से जोड़कर ही उसे सही मायने में प्रासंगिक बनाया जा सकता है। युवाओं के लिए एक मिसाल है। उनका संघर्ष युवाओं को सामाजिक न्याय और समानता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करता है। उनकी विरासत युवाओं को यह सिखाती है कि वे अपनी कला और प्रतिभा का उपयोग समाज को बदलने के लिए कर सकते हैं। नुक्कड़ नाटक आंदोलन को एक नई ऊर्जा दी है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए यह आंदोलन सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम बना रहेगा।

सफ़दर हाशमी का जीवन और कार्य भारतीय नाट्य परंपरा के लिए एक मील का पत्थर है। उन्होंने नाटक को जनता के बीच ले जाने और उसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाने में अहम भूमिका निभाई। उनकी शहादत ने सामाजिक न्याय और कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष को एक नई ऊर्जा दी। सफ़दर हाशमी ने साबित किया कि कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को बदलने की ताकत भी रखती है। उनका योगदान भारतीय नाटक परंपरा के इतिहास में सदैव अमर रहेगा। उनकी विरासत आज भी नाटककारों, कलाकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रेरित करती है। सफ़दर हाशमी का जीवन और कार्य हमें यह सिखाता है कि हमें सामाजिक न्याय और समानता के लिए लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। उनकी विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक है, जो हमें यह प्रेरणा देती है कि हम अपनी कला और प्रतिभा का उपयोग समाज को बदलने के लिए कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हाशमी, सफ़दर. (1990). *जन नाट्य और नुक्कड़ नाटक.* जनम प्रकाशन। (पृ. 45-67)
2. त्रिपाठी, दिनेश. (2005). *भारतीय रंगमंच का इतिहास.* भारतीय प्रकाशन। (पृ. 12-35)
3. भटनागर, संजय. (2012). *नुक्कड़ नाटक और सामाजिक परिवर्तन.* नाट्यशाला प्रकाशन। (पृ. 89-104)
4. यादव, राजेश. (2015). *हाशमी और जन थिएटर आंदोलन.* साहित्य भवन। (पृ. 56-78)
5. सिंह, कमलेश. (2018). *राजनीति और रंगमंच: सफ़दर हाशमी का योगदान.* रंगभारती। (पृ. 23-41)
6. कुमार, अरुण. (2014). *भारतीय नुक्कड़ नाटक की परंपरा.* साहित्य अकादमी। (पृ. 50-68)
7. हाशमी, मल्लिका. (1998). *सफ़दर हाशमी: एक परिचय.* जनसंस्कृति मंच। (पृ. 32-58)
8. घोष, सुभाष. (2009). *रंगमंच की नई धारा.* तमिलनाडु प्रकाशन। (पृ. 75-92)
9. मिश्रा, नीरज. (2016). *राजनीतिक थिएटर और हाशमी का प्रभाव.* भारतीय कला केंद्र। (पृ. 101-120)
10. राव, सुरेश. (2013). *नाटक और सामाजिक चेतना.* कला भारती प्रकाशन। (पृ. 22-43)